|| एकल ||
भारत लोक शिक्षा परिषद्
(एकल अभियान से संबंधित)
विश्व का सर्वश्रेष्ठ सामाजिक शिक्षा संगठन

EKAL ABHIYAN
A PEOPLE'S MOVEMENT

एकल विद्यालय
BHARAT LOK SHIKSHA PARISHAD

अप्रैल, मई, जून
2026

25 वां संस्करण

एकल संदेश-महिला विभाग

विशेष – पंचमुखी गतिविधियाँ-- एवं-- मातृशक्ति की प्रेरक गाथाएं

अगस्त 2026 से जनवरी 2027 तक "स्वाभिमान पर्व" का आयोजन

आगामी अगस्त माह 2026 से जनवरी माह 2027 यानी अगले छह माह तक स्वाभिमान पर्व के अन्तर्गत सभी सेवाव्रती कार्यकर्ता संच एवं ग्राम स्तर पर कार्य करेंगे। इस अवधि में वर्ग, बैठकें एवं अन्य प्रकार के कार्यक्रम आयोजित नहीं किए जायेंगे, जिससे कार्यकर्ताओं का अधिकतम समय ग्राम स्तर के कार्यों में लगाया जा सके। यह निर्णय एकल अभियान केन्द्रीय कार्यकारिणी (CEC) की आभासी बैठक में गत 9 जून 2026 को ली गई। आभासी बैठक की अध्यक्षता एकल अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमन चन्द्रधीर जी ने किया।

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि समिति समर्पण राशि, सदस्यता शुल्क एवं ग्राम स्वावलंबन योजना की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की गई तथा इसे और अधिक सुदृढ़ बनाने का निर्णय लिया गया। साथ ही केन्द्र, प्रभाग, भाग एवं अंचल स्तर तक के समिति सदस्यों से उनके लिए निर्धारित समर्पण निधि को एकल ग्राम संगठन द्वारा निर्मित्त पद्धति के अनुसार संग्रह करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि एकल अभियान के प्रत्येक विषय के केन्द्रीय प्रमुख एवं सह प्रमुख को छोड़कर अन्य सभी टोली सदस्यो को संभाग स्तर पर दायित्व दिए जायेंगें। जबकि प्रभाग स्तर पर प्रभाग अभियान प्रमुख तथा कार्यालय प्रमुख को छोड़कर शेष सभी कार्यकर्ताओं को संभाग अथवा भाग स्तर पर दायित्व दिए जायेंगें। हाँलाकि केन्द्रीय विषय प्रमुख एवं विभाग प्रमुखों का कार्यक्षेत्र उसी प्रभाग में स्थित रहेगा, जिस प्रभाग में उनका केन्द्र स्थित है। एकल अभियान के अंचल, भाग एवं संभाग स्तर तक के सभी अभियान प्रमुखों का कार्यक्षेत्र एवं केन्द्र उनके गृह क्षेत्र (गृह जिला) में नहीं रखने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

इस बैठक में एकल अभियान के 16 समिति सदस्यों एवं 63 सेवाव्रती कार्यकर्ताओं के दायित्व परिवर्तन किए गये।

पराश्रित होना पाप है....

पराश्रित होने पर मनुष्य को अपना सम्मान खोना पड़ता है। वह दूसरों की दया पर निर्भर रहता है। अतः इससे उसकी मानसिक परतंत्रता प्रारंभ हो जाती है। यह सबसे बुरी गुलामी होती है। दूसरों की दया, कृपा, पक्ष पाने के लिए उसे अपनी आत्मा के विरुद्ध जाना पड़ता है, अपनी आत्मा को दबाना पड़ता है।

अतः अपने पैरों पर स्वयं खड़े हों। दूसरों का मुँह न ताकें। तुम मनुष्य हो, तुम ईश्वर के महान पुत्र हो, तुम सर्वसमर्थ हो, तुम क्षमतावान हो। तुम केवल अपने असीम बल को भूले हुए हो। अपने ऊपर भरोसा रखो, अपनी महानता को सोचो, अपने अज्ञान का परित्याग करो। शेर के पुत्र हो, शेर की तरह दहाडो ? याद रखो, भगवान ने तुम्हें हाथ, पैर, बुद्धि सब दिए हैं। यदि परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हैं तो दूसरे का आश्रित न होकर उन्हें ठीक करने का प्रयत्न करें ।

समाज का संबल बनें

ऋषि चिंतन के सान्निध्य में

हमारे शहीद सैनिक....हमारे बार्डर पर सैनिक .... हमारे रिटायर्ड सैनिक....

एकल ने सैनिकों को सम्मानपूर्वक नमन किया, ये हमरे लिए बहुत ही गर्व की बात है। आज उन्ही के कारण हम अपने घरों में चैन से सोते हैं....कि हमारी रक्षा के लिए कोई खड़ा है।

एकल अभियान द्वारा पूरे भारत में सैनिकों को सम्मान

कुल कार्यक्रम	सैनिकों की उपस्थिति
49029	858024

एकल झलक ......जम्मू की...

अखनूर में एकल अभियान का भव्य सैनिक सम्मान समारोह

एकल अभियान जम्मू संभाग, अखनूर अंचल द्वारा भव्य सैनिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 150 से अधिक पूर्व एवं वर्तमान सैनिकों को सम्मानित किया गया। समारोह में हजारों स्थानीय नागरिकों एवं गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सीमाओं पर सेना, समाज में एकल अभियान

मुख्य वक्ता एवं संगठन मंत्री श्री विजय कुमार ने कहा कि जहां हमारे सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं, वहीं एकल अभियान समाज के भीतर नशाखोरी, आंतरिक आतंकवाद, सामाजिक चुनौतियों के विरुद्ध जनजागरण का कार्य कर रहा है। उन्होंने पूर्व सैनिकों से राष्ट्र निर्माण के इस अभियान से जुड़ने का आह्वान किया।

सैनिकों का समाज निर्माण में योगदान -

विशिष्ट वक्ता कैप्टन शमशेर सिंह ने कहा कि सैनिक का दायित्व सेवा निवृत्ति के बाद भी समाप्त नहीं होता। समाज में अनुशासन, राष्ट्रभक्ति और जागरुकता स्थापित करने में पूर्व सैनिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्राथमिक शिक्षा

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है॥

शिक्षक (आचार्य/आचार्या):

- शिक्षक/शिक्षिका न्यूनतम **मैट्रिक (10वीं पास)** होते हैं तथा उसी गाँव के युवक या युवती को प्राथमिकता दी जाती है।
- उन्हें वर्ष में **6 से 8 प्रशिक्षण शिविरों** के माध्यम से नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है।

शैक्षणिक सामग्री (स्टेशनरी किट):

- शिक्षक मार्गदर्शिका, चार्ट, ब्लैकबोर्ड, नोटबुक, उपस्थिति रजिस्टर आदि आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

महिला सशक्तिकरण में भारत लोक शिक्षा परिषद (BLSP) की भूमिका

भारत लोक शिक्षा परिषद (BLSP) महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर रही है। संगठन के अंतर्गत लगभग **50% विद्यार्थी बालिकाएँ, 72% शिक्षक महिलाएँ, 31% पूर्णकालिक कार्यकर्ता महिलाएँ** हैं।

बड़ी संख्या में महिलाएँ **अंशकालिक स्वयंसेवक (Part-time Volunteers)** के रूप में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यह सहभागिता महिलाओं की शिक्षा, नेतृत्व क्षमता, आत्मनिर्भरता एवं सामाजिक भागीदारी को सशक्त बनाने की दिशा में BLSP की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

आरोग्य शिक्षा

जीवन में असली धन पैसा नहीं बल्कि समय और सांसें हैं।
पैसा फिर आ सकता है लेकिन बीता हुआ समय और रुकी हुई सांसें कभी वापस नहीं आतीं।
इसलिए हर पल को प्यार से जियो और हर सांस की कद्र करो।

एकल ने 3 करोड़ से अधिक लोगों को योग से जोड़ा

BLSP के लगभग सभी संभागों में योग कार्यक्रम किया गया

2 लाख एकल गांवों के 3 करोड़ से अधिक प्रतिभागियों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया, जहाँ विद्यार्थियों, शिक्षकों, आरोग्य सेविकाओं और समुदाय के सदस्यों ने योग सत्रों और जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया।

1. उत्तर हिमाचल
2. दक्षिण हिमाचल
3. जम्मू (अखनूर अंचल)
4. पश्चिम पंजाब (जालंधर अंचल)
5. पश्चिम उत्तर प्रदेश
6. ब्रजमंडल
7. उत्तराखंड
8. दक्षिण उत्तर प्रदेश
9. मध्य उत्तर प्रदेश
10. पूर्वी उत्तर प्रदेश
11. उत्तर बिहार

एकल अभियान ने योग को जन-जन तक पहुँचाने के लिए एक व्यापक और प्रभावी अभियान चलाया है। 21 मई से 21 जून तक एकल के माध्यम से देशभर में ऑनलाइन योग प्रशिक्षण एवं योग जागरण कार्यक्रम संचालित किया गया।

इस एक माह के विशेष अभियान के माध्यम से पूरे भारत में लगभग 3 करोड़ लोगों को योग से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया।

ग्रामोत्थान

गांव जागेंगे तो भारतवर्ष जाग जाएगा... गांव उठेंगे तो भारतवर्ष ऊंचा उठ जाएगा।

एकल ग्रामोत्थान की लेह लद्दाख तक पहुँच...कंप्यूटर एवं सिलाई सेंटर का उद्घाटन ...

चीन और पाकिस्तान बॉर्डर तक एकल....

वंदे मातरम और सर्वे भवंतु सुखिना के शब्दों से लद्दाख में हमारे एकल के बच्चों के गीतों की गूंज ने सभी के मन को हर्षा दिया

एकल का लक्ष्य देश के उन स्थानों तक पहुंचना, जहां शिक्षा साधन पहुंचना मुश्किल है। यह हम सबके लिए गर्व की बात है कि लद्दाख में लेह आर्यन और जंस्कार वैली में...तीन स्थानों पर कंप्यूटर और सिलाई केंद्र खोले गए। जिस प्रकार कच्ची मिट्टी को सहारा देकर घड़े का आकार दिया जाता है ..उसी प्रकार से हमारे एकल में भी छोटे-छोटे बच्चों को शिक्षा, कौशल एवं संस्कार के द्वारा एक आकार देकर, व्यक्तित्व का निर्माण किया जा रहा है।

ग्रामोत्थान के प्रोजेक्ट्स ...

Gramothan Resource Center (GRC) विभिन्न कौशल केंद्र	**13**
Skill Development Center (SDC) कंप्यूटर केंद्र एवं सिलाई केंद्र	**18**
Integrated Village Development (IVD) कंप्यूटर, सिलाई, जैविक खेती	**52**
EOW-Ekal on Wheels (EOW) कंप्यूटर बस (गांव-गांव तक पहुंच)	**49**
Women Empowerment Center (WEC) सिलाई ट्रेनिंग सेंटर	**126**
Computer Traning Lab (CTL)-39 कंप्यूटर ट्रेनिंग सेंटर	**39**
Sustainable agriculture training (SAT) जैविक खेती, खाद आदि	**10**
Samrt Village आदर्श गांव	**1**

संस्कार

संस्कार जीवन का सबसे अमूल्य धन हैं,
जो इंसान को सच्चा, विनम्र और महान बनाते हैं।

एकल श्रीहरि---- राष्ट्रीय समन्वय समिति बैठक

विगत 6 एवं 7 जून 2026 को तेरापंथ भवन छत्तरपुर दिल्ली में एकल श्री हरि की राष्ट्रीय समन्वय समिति की बैठक भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन, हनुमान चालीसा एवं श्रीराम स्तुति के साथ संपन्न हुई।

इस बैठक में एकल अभियान के मार्गदर्शक माननीय श्याम जी गुप्त की गरिमा पूर्ण उपस्थिति रही । इस अवसर पर केन्द्रीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष श्री सुमन धीर जी, एकल ग्राम संगठन अध्यक्ष श्री अतुल शाह जी, ईजीएफ ट्रस्टी श्री लक्ष्मी नारायण जी गोयल, श्री पुनीत लोहिया जी,

श्रीहरि सत्संग समिति

संस्कार केंद्र	53805
लाभार्थी	2220964
एकल रथ	123
उपस्थिति	234191

- सांस्कृतिक जागरूकता
- नशामुक्ति
- विभिन्न महापुरुषों की शिक्षाएँ

अभियान प्रभारी श्री राजेश गोयल जी, अभियान प्रमुख श्री ललन शर्मा जी, श्री मुरारी लाल जी, श्री नंदकिशोर जी अग्रवाल जी , श्री बीडी मिमानी जी, श्रीमती निर्मला पेरीवाल जी आदि की गरिमा पूर्ण उपस्थिति रही, राष्ट्रीय सहमंत्री श्रीमती साधना मोढ़ जी द्वारा स्वागत उद्बोधन एवं पूर्व बैंगलोर बैठक का वृत्त निवेदन दिया गया।

भारत के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पहलू में रामचरितमानस पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री विजय केडिया जी द्वारा किया गया , माननीय श्याम जी गुप्त द्वारा मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन दिया गया । इस राष्ट्रीय बैठक में समस्त देश से आये प्रतिनिधियों ने सहभागिता की । इस अवसर पर एक एकल श्री हरि रथ मंदिर का पूजन अर्चन कर उद्घाटन किया गया

विशेष उपलब्धि-- भारत लोक शिक्षा परिषद् को 1A ग्रेडिंग प्रमाणपत्र

NGO Grading

CareEdge
ANALYTICS & ADVISORY

This is to certify that

Bharat Lok Shiksha Parishad

has been assigned an NGO Grading of

NGO 1A

Reflecting Highest Delivery Capability & High Organizational Capability

This grading is valid till March 30th, 2027 i.e. one year from the grading assignment date, issued on March 31st, 2026

Mrs. Tanvi Shah, Senior Director
CARE Analytics and Advisory Private Limited

Bharat Lok Shiksha Parishad को CARE Analytics and Advisory Private Limited द्वारा **NGO 1A ग्रेडिंग प्रमाणपत्र** प्रदान किया गया है, जो संस्था की **सर्वोच्च कार्यान्वयन क्षमता (Highest Delivery Capability)** तथा **उच्च संगठनात्मक क्षमता (High Organizational Capability)** को दर्शाता है।

एकल अभियान : एक दृष्टि में

INDIA
PRABHAG-10
SAMBHAG- 36
BHAG -79
ANCHAL- 3539
SCHOOL- 90603
KARYKARTA- 7618

सक्सेस स्टोरी

नाम: रोहित
ग्राम: मंजीरकांडा
संच: मुनाकोट
अंचल: पिथौरागढ़

मुझे गर्व है कि मुझे **संच प्रशिक्षक** के रूप में एकल में कार्य करने का अवसर मिला। एकल अभियान से मिले संस्कार, अनुशासन और प्रेरणा ने मुझे जीवन में आगे बढ़ने का आत्मविश्वास दिया। आज मैं **विश्व भारती पब्लिक स्कूल, पिथौरागढ़** में **शिक्षक** के रूप में कार्यरत हूँ।
मेरी इस सफलता में **एकल अभियान** का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैं हृदय से एकल परिवार का आभार व्यक्त करता हूँ

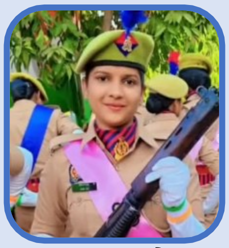

नाम : शिवानी सिंह

ग्राम: पूराजसु

अंचल: कानपुर नगर

मुझे गर्व है कि वर्ष 2018-2019 तक एकल अभियान में आचार्य के रूप में कार्य करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ |

एकल परिवार से जुड़कर मेरी जीवनशैली, भाषा, संस्कृति एवं संस्कार अधिक सुदृढ़ हुए। आज मैं उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत होकर देश सेवा में अपना योगदान देने का प्रयास कर रही हूँ। मेरी इस सफलता में एकल अभियान का अतुलनीय योगदान रहा है। मैं हृदय से एकल का आभार व्यक्त करती हूँ।

दक्षिणी दिल्ली चैप्टर द्वारा चंबा, हिमाचल प्रदेश की वनयात्रा

दक्षिणी दिल्ली चैप्टर द्वारा 14 मई से 17 मई 2026 तक हिमाचल प्रदेश के चंबा में चार दिवसीय प्रेरणादायी वनयात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें 28 वनयात्रियों ने सहभागिता की। यात्रा का उद्देश्य एकल विद्यालयों के कार्यों का अवलोकन, सामाजिक परिवर्तन को समझना, स्थानीय कार्यकर्ताओं से समन्वय स्थापित करना था।

वनयात्रियों ने मेहला गाँव, राजनगर एवं ग्राम काहलो स्थित एकल विद्यालयों का प्रवास किया, जहाँ बच्चों की सांस्कृतिक एवं शैक्षिक प्रस्तुतियों को सराहा गया तथा विद्यार्थियों को शैक्षणिक सामग्री वितरित की गई।

चंबा में आयोजित समन्वय बैठक में विद्यालयों की गुणवत्ता, संचालन एवं ग्रामीण विकास विषयों पर चर्चा हुई। यह वनयात्रा शिक्षा, संस्कार, ग्राम विकास एवं संगठनात्मक समन्वय का प्रेरणादायी अनुभव सिद्ध हुई।

कानपुर चैप्टर महिला समिति द्वारा अंचल कानपुर बैठक

कानपुर चैप्टर महिला समिति द्वारा 26 मई 2026 को अंचल कानपुर के शिवली, बिठूर एवं तात्यागंज संचों की आचार्यों की मासिक बैठक हुई। बैठक में कानपुर चैप्टर समिति की अध्यक्ष डॉ. अनुराधा वार्ष्णेय जी, महिला समिति अध्यक्ष श्रीमती संध्या गुप्ता जी एवं शिवली संच की हेड श्रीमती नीता दत्ता जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

आचार्यों में नई ऊर्जा एवं उत्साह का संचार हुआ तथा उन्होंने संकल्प लिया कि वे अपने विद्यालयों में और अधिक समर्पण के साथ कार्य करेंगे।

भिवानी हरियाणा में GRC Sui सेंटर का प्रवास

श्री राजीव अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री एवं श्रीमति माधुरी अग्रवाल जी द्वारा भिवानी हरियाणा में GRC Sui सेंटर का प्रवास दिनांक 15.06.2026 को किया गया। प्रवास के दौरान सिलाई सेंटर, कंप्यूटर सेंटर और EOW का भी अवलोकन किया गया और उनकी प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त की। भिवानी क्षेत्र के सभी कार्यकर्ताओं और कोऑर्डिनेटर की एक बैठक की गई जिसमें लगभग 50 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

BLSP उत्तरी दिल्ली चैप्टर महिला विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में भारत लोक शिक्षा परिषद् उत्तरी दिल्ली चैप्टर महिला विभाग द्वारा 19 जून 2026 को एक विशेष योग कार्यक्रम का आयोजन एकल भवन, पीतमपुरा, दिल्ली में किया गया, जिसमें लगभग 150 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को योग के माध्यम से स्वस्थ जीवन, मानसिक शांति एवं आध्यात्मिक जागरूकता का संदेश देना और योग के प्रति उन्हें जागरूक करना था।

उत्तरी दिल्ली चैप्टर महिला विभाग की प्रधान श्रीमती साधना गुप्ता जी ने भारत सरकार द्वारा निर्धारित कॉमन योग प्रोटोकॉल के अनुसार उपस्थित सभी लोगों को विभिन्न योगासनों एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया। उन्होंने योगाभ्यास के दौरान प्रत्येक आसन की विधि एवं उसके स्वास्थ्य संबंधी लाभों को सरल एवं सहज रूप से समझाया।

कानपुर चैप्टर प्रवास तथा परिवार मिलन

भारत लोक शिक्षा परिषद् के राष्ट्रीय प्रधान श्री अखिल कुमार गुप्ता जी एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजीव अग्रवाल जी ने 2-3 जुलाई 2026 को BLSP कानपुर, उत्तर प्रदेश का प्रवास किया।
इस प्रवास का मुख्य उद्देश्य कानपुर में संगठनात्मक गतिविधियों की नींव को सुदृढ़ करना, चैप्टर को सुदृढ़ करना तथा स्थानीय नेतृत्व से मिलकर संवाद स्थापित करना था। प्रवास के दौरान परिवार मिलन, दानदाता मिलन एवं समिति एवं कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की गई।

बैठक में कानपुर चैप्टर से डॉ अनुराधा वार्ष्णेय जी, अध्यक्ष, श्री ध्रुव रुईया जी, महामंत्री, श्री अभिषेक गुप्ता जी, सह सचिव, डॉ उमेश पालीवाल जी, श्रीमति देविका मुखर्जी जी, उपाध्यक्ष, श्रीमति संध्या गुप्ता जी, महिला विभाग की अध्यक्ष, सदस्य एवं 18 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

ब्रजमंडल प्रवास में संगठन सुदृढ़ीकरण एवं कार्यकर्ता सक्रियता पर विशेष जोर

भारत लोक शिक्षा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजीव अग्रवाल एवं श्रीमती माधुरी अग्रवाल ने 9 जुलाई 2026 को उत्तर प्रदेश के ब्रजमंडल संभाग का प्रवास किया। इस दौरान ब्रजमंडल संभाग, गोवर्धन भाग तथा उसके अंतर्गत सभी अंचलों एवं संचों के प्रमुखों के साथ बैठक आयोजित की गई, जिसमें लगभग 20 कार्यकर्ता एवं 10 समिति सदस्य उपस्थित रहे।

बैठक का मुख्य उद्देश्य समिति बंधुओं एवं कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय स्थापित करना, उनकी सक्रियता बढ़ाना तथा दानदाता संबंधी जानकारी समयबद्ध रूप से उपलब्ध कराने के प्रति जागरूक करना था।

बैठक में विद्यालय गुणवत्ता, कार्यकर्ता सक्रियता, सैनिक सम्मान, वृक्षारोपण, अंचल पालक योजना, CSR रिपोर्टिंग, कार्यालय व्यवस्था, गूगल ऐप के माध्यम से पारदर्शिता, दायित्व बोध, महिला शक्ति की भूमिका, ग्राम समिति सुदृढ़ीकरण, प्रगत संच एवं स्वावलंबन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। सभी कार्यकर्ताओं ने संगठन को और अधिक प्रभावी एवं सशक्त बनाने का संकल्प लिया।

रांची झारखंड में GRC Karanjo सेंटर का प्रवास

श्री राजीव अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री एवं श्रीमति माधुरी अग्रवाल जी द्वारा रांची झारखंड में GRC करंजो सेंटर का प्रवास दिनांक 28.06.2026 को किया गया। प्रवास के दौरान हल्दी उत्पाद, सिलाई सेंटर ,कंप्यूटर सेंटर, लाइब्रेरी, ऑर्गेनिक खेती, बढ़ईगिरी, आरोग्य भवन, विद्यालय , गौशाला , खेती बाड़ी ,सभी कुछ बहुत ही व्यवस्थित रूप में देखने को मिला।

हथकरघा सेंटर पहली बार देखने को मिला। सेंटर बहुत अच्छा व्यवस्थित और सुचारू रूप से चल रहा है। हमारे सभी ट्रेनर एवं कार्यकर्ता अच्छी तरह काम कर रहे हैं। महिला समिति के एक सशक्त रूप से कार्य कर रही है। आचार्य का प्रशिक्षण वर्ग भी चल रहा था उन्हें सफेद लाल वेशभूषा साड़ी में देखकर बहुत अच्छा लगा।

नारी शक्ति

सृजन, संस्कार, शक्ति, सुचरित्र, धैर्य, पराक्रम और समाज की निर्माणकर्ता

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।"

"भावार्थ: जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है।"

भारतीय नारी को समर्पित इस अध्याय में हम ऐसी महान नारी-शक्तियों के जीवन से परिचित होंगे, जो त्याग, मातृत्व, ज्ञान, भक्ति, साहस, स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम की प्रतीक रही हैं। ये उदाहरण केवल कुछ प्रेरणादायी झलकियाँ हैं, क्योंकि भारत के गौरवशाली इतिहास में अनगिनत माताओं, और बेटियों ने अपने सुचरित्र, धैर्य, संस्कार और पराक्रम से भारतीय परंपरा को सुदृढ़ बनाया है।

आदर्श माताएँ

माँ कौशल्या (त्रेतायुग)

भगवान श्रीराम का एक प्रिय नाम "कौशल्यनंदन" भी है। माँ कौशल्या धर्म, संस्कार और कर्तव्य की जीवंत प्रेरणा थीं। जब माता कैकेयी के वचनों के कारण श्रीराम को वनवास जाना पड़ा, तब माँ कौशल्या ने पुत्र मोह से ऊपर उठकर उन्हें पिता की आज्ञा का पालन करने की प्रेरणा दी। माँ के इसी महान निर्णय, धैर्य और श्रेष्ठ संस्कारों के कारण अयोध्या के राजकुमार राम आगे चलकर "मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम" कहलाए।

शिक्षा –

"माता का सही मार्गदर्शन ही बच्चों के जीवन को महान बनाता है।"

माँ देवकी (द्वापर युग)

जन्म लेते ही यदि किसी शिशु को उसकी माँ से अलग कर दिया जाए, तो उस पीड़ा की कल्पना भी कठिन है। माँ देवकी ने यह असहनीय दुःख कई बार सहा। उन्हें ज्ञात था कि उनकी कोख से जन्म लेने वाला आठवाँ बालक कंस के अत्याचार का अंत करेगा। इसी कारण उन्होंने अपने सात पुत्रों का बलिदान सहन किया और श्रीकृष्ण के जन्म के तुरंत बाद अपने नवजात बालक को नंदगाँव भेज दिया। उनका यही त्याग और धैर्य धर्म की रक्षा का आधार बना और बारह वर्षों बाद कंस के अत्याचारों से सभी को मुक्ति मिली।

शिक्षा –

"त्याग और धैर्य धर्म की रक्षा का आधार बनते हैं।"

माँ यशोदा (द्वापर युग)

श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं और माँ यशोदा के वात्सल्य का वर्णन आज भी बड़े प्रेम और श्रद्धा से किया जाता है। माँ यशोदा के प्रेम, संस्कार और पालन-पोषण का ही प्रभाव था कि बालक श्रीकृष्ण इतने बलवान और तेजस्वी बने। कान्हा की नटखट लीलाएँ और माँ यशोदा का स्नेह आज भी मातृत्व की सबसे सुंदर छवि मानी जाती हैं। "मैया मोरी, मैं नहीं माखन खायो" जैसे पद और अनेक भजन आज भी माँ-बेटे के निश्छल प्रेम को जीवंत कर देते हैं।

शिक्षा -

माँ का वात्सल्य और प्रेम ही ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है।

पन्ना धाय (15वीं-16वीं शताब्दी)

पन्ना धाय ने मेवाड़ के राजकुमार उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान दे दिया। जब शत्रुओं ने नवजात राजकुमार को मारने की योजना बनाई, तब पन्ना धाय ने एक पल भी अपने बेटे की चिंता किए बिना उसे राजकुमार के स्थान पर सुला दिया और उदयसिंह को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। उनका यह निस्वार्थ त्याग आगे चलकर मेवाड़ के इतिहास और महाराणा प्रताप जैसे महान वीर की वंश परंपरा को सुरक्षित रखने का कारण बना। पन्ना धाय का त्याग राष्ट्रगौरव के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय के रूप में सदैव अमर रहेगा।

शिक्षा - निस्वार्थ त्याग महान वीर की वंश परंपरा को सुरक्षित रखता है।

माँ जीजाबाई (12.01.1598-17.06.1674)

माँ जीजाबाई ने बालक शिवाजी को बचपन से ही धर्म, साहस और मातृभूमि की रक्षा का पाठ पढ़ाया। अपनी कहानियों और शिक्षाओं से उन्होंने शिवाजी के मन में स्वाभिमान और वीरता की भावना जागृत की। माँ जीजाबाई का जीवन बताता है कि एक संस्कारी और जागरूक माता पूरे राष्ट्र का भविष्य बदल सकती है। उनके आदर्शों ने छत्रपति शिवाजी महाराज को महान योद्धा और आदर्श शासक बनाया।

शिक्षा -

माँ का जीवन बताता है कि एक संस्कारी और जागरूक माता पूरे राष्ट्र का भविष्य बदल सकती है।

माँ शारदा (22.12.1853-20.07.1920)

माँ शारदा श्री रामकृष्ण परमहंस की धर्मपत्नी थीं। श्री रामकृष्ण सारदा को माँ जगदम्बा के रूप में देखते थे और ये उन्हें जगदीश्वर समझती थीं। श्री रामकृष्ण के समाधिस्थ होने के बाद इन्होंने विवेकानन्द आदि उनके शिष्यों का पुत्रवत पालन किया। स्वयं अपने जीवन को आध्यात्मिक साँचे में ढालकर माँ सारदा ने अपने पति के शिष्यों को भी आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया।

शिक्षा - शिष्यों को पुत्रवत प्रेम

आध्यात्मिक और विदुषी महिलाएँ

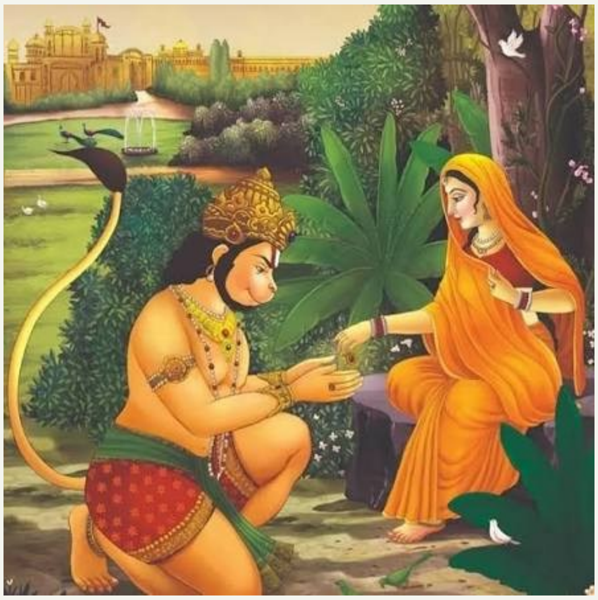

माँ सीता (त्रेतायुग)

माँ जानकी (सीताजी) आदर्श नारी, प्रेम, त्याग और मर्यादा की जीवंत प्रेरणा हैं। इन्होंने राजमहलों के सभी सुख छोड़कर अपने पति प्रभु श्रीराम के साथ वनवास का मार्ग खुशी-खुशी अपनाया। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी इन्होंने धैर्य, साहस और पवित्रता का साथ कभी नहीं छोड़ा। रावण जैसे अत्याचारी के अनेक कष्टों के बीच भी माँ सीता अपने सतीत्व और संस्कारों पर अटल रहीं। आज भी जब आदर्श नारी, सहनशीलता और परिवार के प्रति समर्पण की बात होती है, तब श्रद्धा से कहा जाता है सीता जैसी नारी बनो |

शिक्षा -सीता जैसी त्याग करने वाली नारी बनो

गार्गी (प्राचीन काल)

वचकनु ऋषि की विदुषी पुत्री गार्गी अपने अद्भुत ब्रह्मज्ञान के कारण "ब्रह्मवादिनी" कहलाती थीं। उन्होंने राजा जनक की यज्ञशाला में महान ब्रह्मज्ञानी याज्वल्क्य के साथ दार्शनिक शास्त्रार्थ कर अपने ज्ञान और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। गार्गी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन भारत में स्त्रियाँ भी वेद, दर्शन और विभिन्न विद्याओं का अध्ययन करती थीं तथा यज्ञ, सभा और शास्त्रार्थ जैसे सार्वजनिक आयोजनों में सम्मानपूर्वक सहभागिता करती थीं। उनका व्यक्तित्व भारतीय नारी की विद्वता, आत्मविश्वास और ज्ञान-परंपरा का उज्ज्वल उदाहरण है।

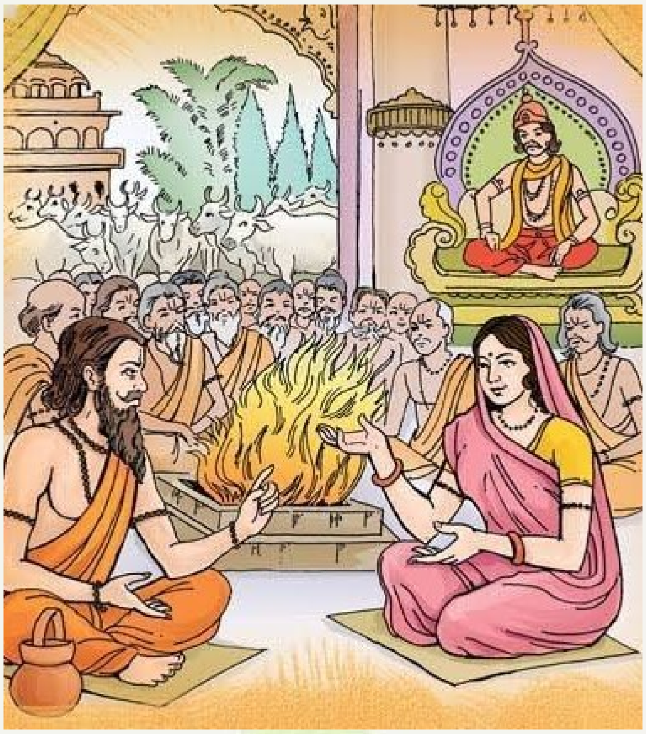

शिक्षा -

भारत में नारी हमेशा शिक्षा और ज्ञान की समान भागीदार रही है और सदैव रहेगी।

अनुसुइया (प्राचीन काल)

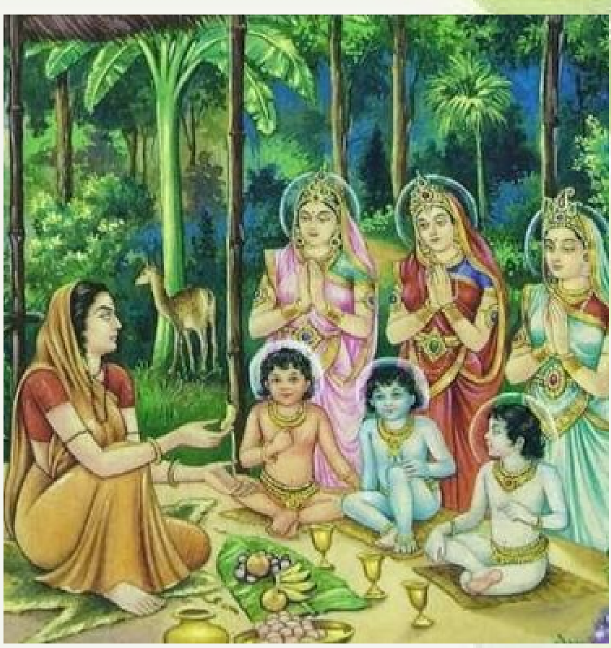

सती अनसूया महर्षि अत्रि की पत्नी थीं। एक कथा आती है कि एक बार मांडव्य ऋषि ने किसी ऋषि पत्नी को सूर्योदय होते ही विधवा होने का श्राप दे दिया, तब सती अनसूया ने अपने तपोबल से सूर्योदय ही रुकवा दिया। बाद में देवताओं और ऋषियों के आग्रह पर उन्होंने उस स्त्री के पति को पुनः जीवन दिलाकर उसके सुहाग की रक्षा की। वनवास के दौरान राम अत्रि ऋषि के आश्रम पर गए, तब अनसुया जी ने सीता को नारी धर्म व पतिव्रत का उपदेश दिया था। इन्हें त्रिदेवों के अंशरूप दत्तात्रेय पुत्र रूप में प्राप्त हुए।

शिक्षा -

तप, निष्ठा और सद्गुणों से दूसरों के जीवन में भी प्रकाश लाया जा सकता है।

मैत्रेयी (प्राचीन काल)

मैत्रेयी प्राचीन भारत की महान विदुषी और ज्ञानप्रेमी ब्रह्मवादिनी थीं। वे महर्षि याज्वल्क्य की पत्नी थीं। एक बार जब याज्ञवल्क्य जी गृहत्याग की तैयारी कर रहे थे, तब उन्होंने अपनी संपत्ति बाँटने की बात कही। उस समय मैत्रेयी ने पूछा- "क्या धन से अमरत्व प्राप्त हो सकता है?" जब उत्तर "नहीं" मिला, तब उन्होंने धन के स्थान पर आत्मज्ञान प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। उनके ज्ञानप्रेम और जिज्ञासा ने उन्हें भारतीय दर्शन की महान विदुषियों में स्थान दिलाया। मैत्रेयी का जीवन ज्ञान और सत्य की खोज की प्रेरणा देता है।

शिक्षा -

धन से बढ़कर ज्ञान और आत्मबोध का महत्व होता है।

सावित्री (प्राचीन काल)

महासतियों में उल्लेखनीय देवी सावित्री आज भी भारतीय नारीत्व का आदर्श मानी जाती हैं। उन्होंने यह जानते हुए भी कि सत्यवान अल्पायु हैं, उन्हें अपने पति के रूप में स्वीकार किया। जब सत्यवान की मृत्यु का समय निकट आया, तब सावित्री ने कठोर व्रत और अटूट संकल्प धारण किया। सत्यवान के प्राण लेकर जाते समय वे यमराज के पीछे-पीछे चलती रहीं। मार्ग में हुए प्रश्नोत्तर और अपनी पति-परायणता से उन्होंने यमराज को भी प्रभावित कर दिया। अंततः यमराज ने प्रसन्न होकर सत्यवान के प्राण लौटा दिए।

शिक्षा - धैर्य और निष्ठा से सौभाग्य की भी रक्षा की जा सकती है।

भक्ति गीत

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, कृपा कर अपनायो ॥
जनम-जन्म की पूँजी पाई, जग में सब ही खोवायो।
खर्च न कोय, चोर न लेवे, दिन-दिन बढ़त सवायो॥

मीराबाई (16वीं शताब्दी)

रत्नसिंह राठौर की पुत्री मीराबाई को बचपन से ही श्रीकृष्ण भक्ति में गहरी लगन थी। उनका विवाह मेवाड़ के राजकुमार भोजराज के साथ हुआ, किन्तु मीरा का मन सदैव कृष्ण प्रेम में ही डूबा रहा। राणा ने उन्हें भक्ति मार्ग से हटाने के लिए अनेक प्रयास किए कभी विष का प्याला दिया गया, तो कभी काँटों की शय्या। परन्तु कृष्ण भक्ति में लीन मीरा ने हर कष्ट को सहज भाव से सहन किया। "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई" उनके जीवन का अमर स्वर बन गया। अंततः मीरा सम्पूर्ण संसार में भक्ति की अमिट छाप छोड़कर श्रीकृष्ण में लीन हो गईं। सच्ची भक्ति और विश्वास हर कठिनाई को सरल बना देते हैं।

"मीरा पुकारे जब गिरधर गोपाला, ढल गया अमृत में विष का भरा प्याला।"

शिक्षा - सच्ची भक्ति और विश्वास हर कठिनाई को सरल बना देते हैं।

वीरांगनाएँ और शासिका

रानी पद्मिनी (13वीं-14वीं शताब्दी)

रानी पद्मिनी चित्तौड़ की वीर और स्वाभिमानी रानी थीं। उनकी सुंदरता की चर्चा सुनकर अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। रानी पद्मिनी ने अपने सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए हजारों राजपूत महिलाओं के साथ जौहर किया।

शिक्षा - अपने सम्मान और मर्यादा की रक्षा सदैव करनी चाहिए

रानी दुर्गावती (16वीं शताब्दी)

रानी दुर्गावती गोंडवाना की वीर रानी थीं। उन्होंने मुगल सेनापति आसफ खाँ के विरुद्ध बहादुरी से युद्ध किया। युद्ध में घायल होने के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी। पराजय निश्चित देखकर उन्होंने आत्म-समर्पण करने के बजाय वीरगति को स्वीकार किया।

शिक्षा - आत्म-समर्पण करने के बजाय वीरगति को प्राप्त करना श्रेष्ठ है

रानी कर्णावती (16वीं शताब्दी)

रानी कर्णावती मेवाड़ की वीर और स्वाभिमानी रानी थीं। गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने जब चित्तौड़ पर आक्रमण किया, तब उन्होंने पूरे साहस के साथ राज्य की रक्षा के लिए सेना का नेतृत्व किया। अंत में सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा हेतु उन्होंने जौहर किया।

शिक्षा –स्वाभिमान की सदैव रक्षा करनी चाहिए

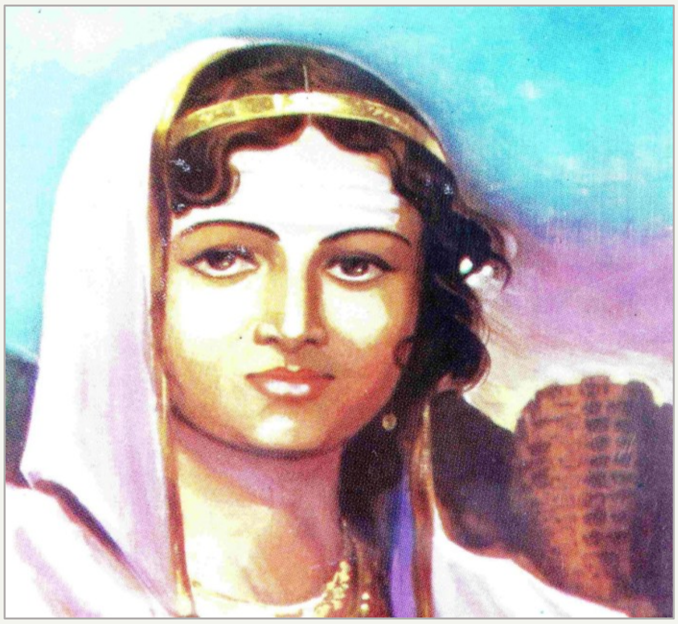

केलाड़ी चेनम्मा (17वीं शताब्दी)

केलाड़ी चेनम्मा कर्नाटक की वीर और दूरदर्शी रानी थीं। जब मुगल सम्राट औरंगज़ेब "छत्रपति राजाराम" को पकड़ना चाहता था, तब रानी चेनम्मा ने उन्हें अपने राज्य में शरण देकर सुरक्षित बचाया। उनका जीवन नारी शक्ति, नेतृत्व और राष्ट्र भक्ति की अमर प्रेरणा है।

शिक्षा- सहयोग और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा

ओनाके ओबव्वा (18वीं शताब्दी)

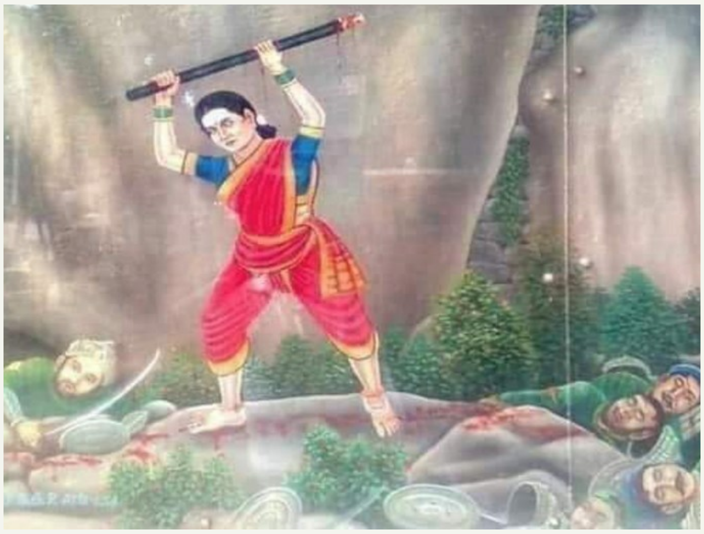

ओनाके ओबव्वा कर्नाटक की साहसी वीरांगना थीं। जब शत्रु चित्रदुर्ग किले में एक संकरें मार्ग से प्रवेश करने लगे, तब उन्होंने अकेले ही "ओनाके" (लकड़ी के मूसल) से एक-एक कर कई सैनिकों को मार गिराया। उनकी सतर्कता और वीरता ने किले की रक्षा की।

शिक्षा – सतर्कता से सफलता

रानी लक्ष्मीबाई (19वीं शताब्दी)

रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की वीरांगना रानी थीं। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध साहसपूर्वक युद्ध किया। अपने पुत्र को पीठ पर बाँधकर युद्धभूमि में उतरने वाली रानी लक्ष्मीबाई ने अंत तक झाँसी की रक्षा की।

शिक्षा – स्वाभिमान से समझौता नही करना चाहिए

समाज की नायिका

बछेंद्री पाल 24.05.1954 - जीवित

बछेंद्री पाल माउंट एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला हैं। कठिन परिस्थितियों और अनेक बाधाओं के बावजूद उन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास से यह उपलब्धि प्राप्त की। उनका जीवन बताता है कि दृढ़ निश्चय से कोई भी लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षा- कठिन परिस्थितियों और अनेक बाधाओं के बाद भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है

बुला चौधरी- 02.01.1970 -जीवित

बुला चौधरी प्रसिद्ध भारतीय तैराक हैं। वे सात समुद्रों को पार करने वाली एशिया की पहली महिला बनीं। कठिन जलधाराओं और लंबे संघर्ष के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। उनका साहस और निरंतर अभ्यास युवाओं को बड़े सपने देखने की प्रेरणा देता **है।**

शिक्षा – हार नही मानना चाहिए

नीरजा भनोट (अशोक चक्र)
07.09.1963-05.09.1986

नीरजा भनोट एक साहसी एयर होस्टेस थीं। विमान अपहरण के दौरान उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना यात्रियों की रक्षा की और अनेक लोगों की जान बचाई। बच्चों को बचाते समय वे वीरगति को प्राप्त हुईं। उनके अद्भुत साहस के लिए उन्हें मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। दूसरों की रक्षा के लिए किया गया साहस सबसे महान होता है।

शिक्षा – राष्ट्र सर्वप्रथम

टेसी थॉमस 01.04.1963 - जीवित

टेसी थॉमस भारत की प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं, जिन्हें "मिसाइल वूमन ऑफ इंडिया" के नाम से जाना जाता है। उनका सबसे उल्लेखनीय कार्य अग्नि-5 मिसाइल परियोजना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। उनके नेतृत्व और वैज्ञानिक कौशल के कारण भारत ने लंबी दूरी की स्वदेशी मिसाइल तकनीक के क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त की। उन्होंने रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देकर देश की सामरिक शक्ति को सुदृढ़ बनाया। इनका जीवन परिश्रम, और दृढ़ संकल्प का प्रेरणादायक उदाहरण है।

शिक्षा – राष्ट्र सेवा का संकल्प

भीकाजी कामा (24.09.1861-13.08.1936)

भीकाजी कामा भारत की महान स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने विदेश में रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाई। 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट सम्मेलन में उन्होंने भारतीय ध्वज फहराकर दुनिया को भारत की आज़ादी का संदेश दिया। उनका साहस और देशप्रेम आज भी प्रेरणा देता है।

शिक्षा – विदेश रहकर भी स्वदेश से प्रेम

अहिल्याबाई होल्कर (31.05.1725-13.08.1795)

अहिल्याबाई होल्कर मालवा की आदर्श और न्यायप्रिय रानी थीं। पति और पुत्र के निधन के बाद भी उन्होंने साहसपूर्वक राज्य की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने काशी, सोमनाथ और अनेक तीर्थस्थलों का पुनर्निर्माण कराया तथा प्रजा के कल्याण के लिए अनेक कार्य किए।

शिक्षा - प्रजा का कल्याण सर्वोपरि

भगिनी निवेदिता (28.10.1867-13.10.1911)

भगिनी निवेदिता का मूल नाम मार्गरेट नोबल था। वे आयरलैंड में जन्मी थीं। स्वामी विवेकानन्द के विचारों और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर वे उनकी शिष्या बनीं तथा 1898 ई. में भारत आईं। स्वामी विवेकानन्द ने उन्हें "भगिनी निवेदिता" नाम दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति, हिन्दू धर्म और सेवा भाव को पूर्ण रूप से आत्मसात कर लिया। वे दीन-दुःखियों की सेवा, महिलाओं की शिक्षा और राष्ट्रजागरण के कार्यों में लग गईं। उन्होंने भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता का प्रचार किया तथा क्रांतिकारियों को भी प्रेरणा दी। उनका जीवन सेवा और समर्पण का अद्भुत उदाहरण है।

शिक्षा - दीन-दुःखियों की सेवा

सावित्रीबाई फुले (03.01.1831 – 10.03.1897)

भारत की महान समाज सुधारक, शिक्षाविद् और महिला शिक्षा की अग्रदूत थीं। उन्होंने बालिकाओं और वंचित वर्गों के लिए शिक्षा के द्वार खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामाजिक कुरीतियों, भेदभाव और असमानता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। उनका जीवन सेवा, साहस और समर्पण का आदर्श उदाहरण है। शिक्षा और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में उनका योगदान आज भी समाज को नई दिशा प्रदान करता है।

शिक्षा - आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा

प्रेरक कहानी : साहस और संयम

वीर सावरकर जी

वीर सावरकर का जीवन केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि साहस, राष्ट्रभक्ति, त्याग और अदम्य संकल्प का ऐसा प्रेरणास्रोत है, जो आज भी युवाओं के हृदय में जोश और देशभक्ति की भावना जागृत करता है।

उनके जीवन की सबसे प्रेरणादायक घटनाओं में से एक घटना वर्ष **1910** की है। अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया था और भारत लाने के लिए एक जहाज से ले जाया जा रहा था। सामान्य व्यक्ति ऐसी स्थिति में निराश हो जाता, लेकिन सावरकर जी ने हार मानना स्वीकार नहीं किया। जब जहाज फ्रांस के मार्सेय बंदरगाह के निकट पहुँचा, तब उन्होंने एक साहसिक निर्णय लिया।

जहाज के छोटे से शौचालय की खिड़की, जो इतनी संकरी थी कि वहाँ से निकलना लगभग असंभव था, उसी से उन्होंने अपने शरीर को बाहर निकाला और विशाल समुद्र में छलांग लगा दी। चारों ओर अथाह पानी था, सामने अनिश्चित भविष्य था, पीछे अंग्रेज सैनिकों का भय था, लेकिन उनके मन में केवल एक ही विचार था – **"मुझे अपने देश की स्वतंत्रता के लिए जीवित रहना है, संघर्ष करना है।"**

यह घटना हमें सिखाती है कि **विपरीत परिस्थितियाँ केवल उन्हीं को रोकती हैं, जिनके सपने छोटे होते हैं; जिनके मन में बड़ा उद्देश्य हो, वे हर कठिनाई को चुनौती बना लेते हैं।**

इसके बाद उन्हें **सेल्युलर जेल (कालापानी)** में कठोर यातनाएँ दी गईं। कल्पना कीजिए, एक छोटी अंधेरी कोठरी, हाथों में बेड़ियाँ, कठिन श्रम, अपमान और असहनीय कष्ट – फिर भी सावरकर जी का मन कभी नहीं टूटा। उन्होंने जेल की दीवारों को ही अपना कागज बना लिया और कीलों तथा कोयले से कविताएँ एवं विचार लिखे। वे जानते थे कि शरीर को कैद किया जा सकता है, लेकिन विचारों और संकल्प को नहीं।

उनका जीवन युवाओं को यह संदेश देता है कि **यदि लक्ष्य महान हो, तो संघर्ष कभी बोझ नहीं लगता।** जीवन में कठिनाइयाँ आएँगी, लोग आलोचना करेंगे, परिस्थितियाँ प्रतिकूल होंगी, लेकिन जो व्यक्ति अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहता है, वही समाज और राष्ट्र के लिए मिसाल बनता है।

युवाओं के लिए प्रेरणा :

- अपने जीवन में बड़ा लक्ष्य निर्धारित करें।
- अनुशासन, साहस और आत्मविश्वास को अपना साथी बनाएं।
- अपने राष्ट्र, समाज और संस्कृति के प्रति जिम्मेदारी समझें।
- संघर्ष से भागने के बजाय उसका सामना करना सीखें।

प्रेरक संदेश : "युवा वही है, जो परिस्थितियों के आगे झुकता नहीं, बल्कि अपने साहस और संकल्प से नई राह बनाता है। वीर सावरकर का जीवन हमें यही सिखाता है कि देश और समाज के लिए जीया गया जीवन ही वास्तव में सार्थक होता है।

संपादक की कलम से......

माधुरी अग्रवाल
राष्ट्रीय उपप्रधान,
राष्ट्रीय महिला विभाग

एकल केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक परिवार है। इस परिवार में मुझे **"एकल माँ"** का दायित्व निभाने का सौभाग्य मिला है। आज हजारों बच्चे मुझे अपनी माँ के रूप में स्नेह और सम्मान देते हैं। एक युवक की जन्मदात्री माँ ने भावुक होकर कहा था–**"मैंने उसे जन्म दिया है, लेकिन एकल की माँ ने उसे वे संस्कार दिए हैं, जिनके कारण वह आज समाज और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए ढाल बनकर खड़ा है।"** यह शब्द केवल भावनाएँ नहीं, बल्कि एकल अभियान के सेवा, संस्कार और मातृत्व के जीवंत स्वरूप का परिचय हैं।

एकल अभियान के माध्यम से नारी शिक्षा समाज में सकारात्मक परिवर्तन की आधारशिला बन रही है। एक शिक्षित नारी केवल अपने परिवार को ही नहीं, बल्कि पूरे समाज को शिक्षा, संस्कार और जागरूकता की दिशा देती है। एकल विद्यालयों के माध्यम से दूरस्थ एवं वंचित क्षेत्रों की मातृशक्ति और बालिकाओं तक शिक्षा, संस्कार एवं आत्मविश्वास का प्रकाश पहुँच रहा है।

आज आवश्यकता है कि अधिक से अधिक महिलाएँ एकल अभियान से जुड़ें और शिक्षा एवं संस्कार के इस महायज्ञ में अपनी सहभागिता निभाएँ।

जब नारी शिक्षित, जागरूक और सशक्त होगी, तभी संस्कारित परिवार, समृद्ध समाज और आत्मनिर्भर, सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

एकल विद्यालय के लिए सहयोग

आईये अपने सपनों का भारत बनायें और स्वावलंबी, स्वाभिमानी भारत के नागरिक होने का गौरव प्राप्त करें।

एक एकल विद्यालय	₹ 30,000/- वार्षिक
50 एकल विद्यालय (परमवीर)	₹ 15,00,000/- वार्षिक
100 एकल विद्यालय (शतकवीर)	₹ 30,00,000/- वार्षिक
1000 एकल विद्यालय (महाशतकवीर)	₹ 30,000,000/- वार्षिक

भारत लोक शिक्षा परिषद् भारत सरकार के कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय (IICA) के अंतर्गत CSR दान के लिए सूचीबद्ध है।

DONATE NOW

एकल विद्यालय में सीधे दान हेतु सम्पर्क करें-

Only For 80G:
Bharat Lok Shiksha Parishad
A/C No: 467902050000186
Union Bank of India
Shalimar Bagh, Delhi
IFSC Code: UBIN0546798

Only for CSR:
Bharat Lok Shiksha Parishad
A/C NO. 467902010123677
Union Bank Of India
Shalimar Bagh, Delhi
IFSC code: UBIN0546798

For More Info.

प्रकाशक : भारत लोक शिक्षा परिषद्

मुख्य संपादक – श्रीमती माधुरी अग्रवाल (राष्ट्रीय उपप्रधान, राष्ट्रीय महिला विभाग)

सेन्ट्रल ऑफिस : NS-15, FD Block, पीतमपुरा, दिल्ली- 110034
संपर्क सूत्र : 011 4752 3879, 9999399063, 8448386443, 7827208127
ई मेल : administration@blspindia.org, वेबसाइट : www.ekalblspindia.org

एकल विद्यालय
Bharat Lok Shiksha Parishad